Vol 4 Issue 12 Sept 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 4 | Issue - 12 | Sept - 2015

कालिदास की सूक्तियों में नारी विमर्श

आयशा फ़ातमी
वरिष्ठ प्रवक्ता-प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग , नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ.

प्रस्तावना :

प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य सूक्ति परम्परा से अत्यन्त समृद्ध है। वह संक्षिप्त उक्ति जो पूर्ण सारगर्भित अर्थ दे सूक्ति कहलाती है। कालिदास महान सूक्तिकार हैं। उनकी रचनाओं में नारी सूक्तियों का प्रमुख विषय रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में कालिदास की सूक्तियों में नारी के शारीरिक, भावात्मक तथा सामाजिक पक्षों पर विमर्श करने का प्रयास किया गया है।

महत्वपूर्ण बिन्दु – सूक्ति, कालिदास, नारी

भारत में प्राचीन काल से ही साहित्य में सूक्तियों की परम्परा विद्यमान रही है। धार्मिक साहित्य के साथ-साथ लौकिक साहित्य की विविध धाराओं में सूक्तियों का भरपूर प्रयोग हुआ है। संस्कृत साहित्य तो सूक्तियों से अत्यन्त समृद्ध है।

सु + उक्ति के मेल से बने सूक्ति पद का अर्थ सामान्यतः "एक सुंदर शोभन गुण युक्त, मूल्यवान, गरिमापूर्ण कथन जिसमें अपनी इच्छानुसार और शीघ्रता से (अर्थात् अचानक) कही हुई (spontaneous) अभिव्यक्ति हो"[१] माना जाता है। दूसरे शब्दों में "प्राञ्जल एवं सुगठित भाषा में ऐसी संक्षिप्त सारगर्भित, सामान्यात्मक एवं पूर्ण उक्ति जो किसी मानवीय तथ्य का प्रतिपादन करे या मानव को प्रेरणा दे और परिस्थिति साम्य होने पर उद्धरणीय हो, सूक्ति कहलाती है।[२]

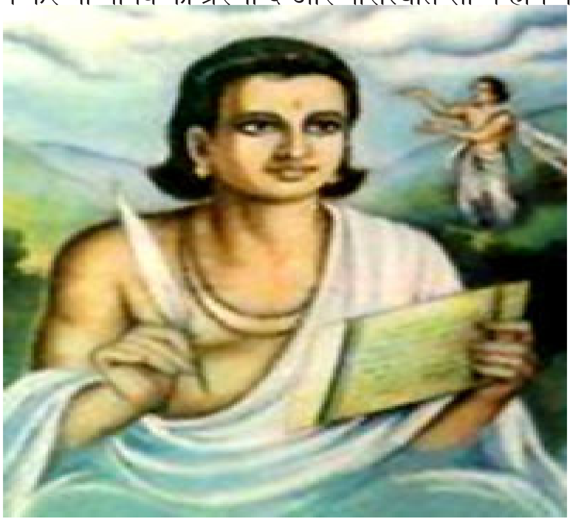

सूक्तियाँ वस्तुतः समाज का प्रतिबिम्ब होती हैं। नारी समाज का अभिन्न अंग है। संस्कृत साहित्य में नारी संबंधी सूक्तियाँ प्रचुर संख्या में प्राप्त होती है। भारतीय समाज के दृष्टिकोण संबंधी अध्ययन में ये सूक्तियाँ विशेष सहायक हैं।

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पंडित हैं। उनकी रचनाओं की प्रायः हर उक्ति सूक्ति प्रतीत होती है। कवि बाण ने कालिदास की सूक्तियों की प्रशंसा में लिखा है- "मधुर (मनोहारिणी) तथा (सान्द्र) धनी और रस से ओतप्रोत (अथवा मधु सी सुस्वाद एवं श्रृंगारादि रसों से सिक्त) कालिदास की सूक्तियों के मंजरियों के समान अनायास ही निकल आने पर (अर्थात् उच्चारण मात्र से) किसे आनन्द नहीं होता?[३]

कालिदास सौन्दर्य प्रेम और भावों के कवि हैं। उनकी रचनाओं में नारी को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होंने नारी का कुमारी, विवाहिता, प्रेमिका, जननी आदि सभी रूपों में चित्रण किया है तथा नारी की शारीरिक विशिष्टताओं के साथ-साथ उसके विभिन्न स्वाभाविक गुणों तथा अवगुणों पर सूक्तियाँ लिखी हैं। ये सूक्तियाँ न केवल नारी के स्वाभाविक आचार-विचार की अभिव्यक्ति हैं अपितु समाज में उनकी विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिकाओं की महत्ता की परिचायिका भी हैं। इन सूक्तियों में अभिव्यक्त प्रत्येक भाव अक्षरशः सत्य हो यह संभव नहीं है क्योंकि इसमें कवि का व्यक्तिगत दृष्टिकोण भी व्यक्त होता है जो सामान्यतः अपने समाज, धर्म और परिस्थितियों से प्रभावित होता है। फिर भी इन सूक्तियों से नारी का एक समग्र चित्र अवश्य नेत्रों के समक्ष उपस्थित होता है –

नारी के स्वभाव तथा व्यवहार आदि से संबंधित सूक्तियाँ :– इन सूक्तियों के अन्तर्गत नारी के मन स्वभाव तथा व्यवहार को समझने की चेष्टा की गई है जो उसे नारी होने के कारण प्रकृति से प्राप्त हुआ है। इन सूक्तियों से नारी का भावात्मक पक्ष प्रकट होता है।

प्रेम और रस का आधार :– प्रेम जीवन की एक सशक्त और अनिवार्य अनुभूति है। प्रेम की उत्पत्ति दो के बिना नहीं हो सकती है। ये दो आधार प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी, माता-शिशु आदि कोई भी हो सकते हैं। नारी प्रेम की आधारशिला है। जब नारी के मन में प्रेम का उदय होता है तब उसकी पहली प्रतिक्रिया वाणी द्वारा नहीं अपितु आंगिक हाव-भाव द्वारा प्रकट होती है। कालिदास ने बड़ी

सूक्ष्मता से नारी की इस भावभंगिमा का अध्ययन किया है तभी तो स्पष्टतः उद्घोषित करते हैं–

"स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु"[४] अर्थात्– "स्त्रियों की केलिपूर्ण चेष्टाएँ ही प्रियों के प्रति उनका निवेदन होता है।"कालिदास प्रेम को उभयपक्षी मानते हैं। इसीलिये वकुलावलिका के माध्यम से राजा के विषय में मालविका से कहते हैं–"अनुरागो•नुरागेण परीक्षितव्यः[५] अर्थात्"अनुराग की परीक्षा अनुराग से ही होती है।"प्रेम निश्छल और निष्कपट होता है। यह भावना अपनत्व पर आश्रित है। इरावती की उपेक्षापूर्ण दृष्टि से आहत होकर राजा सहसा कह उठता है–"न शोभते प्रणयिजने निरपेक्षता[६] अर्थात्–"प्रिय के प्रति उपेक्षा भाव अच्छा नहीं लगता।"प्रेम में रूठना मनाना भी प्रचलित है। कालिदास द्वारा चित्रित एक दृश्य में रूठी रानी के चले जाने पर उसे मना सकने में अपनी असमर्थता का कारण राजा अपनी 'रसहीनता' को समझता है–"प्रियवचनकृतोऽपि योषितां दयितजनानुनयो रसादृते। प्रविशति हृदयं न तद्विदां मणिरिव कृत्रिमरागयोजितः।।"[७] अर्थात्–"प्रिय के सैकड़ों वचन भी बिना रस के समझदार स्त्रियों के हृदय में वैसे ही प्रविष्ट नहीं होते जैसे कि नकली चमक से हीरा जौहरी के हृदय में नहीं समाता।"

कवि ने प्रेम के नैतिक तथा आध्यात्मिक पक्ष पर बल दिया है। अरून्धती को गुरु वशिष्ठ के साथ देखकर शिव को सती साध्वी स्त्री से विवाह करने की अभिलाषा हुई क्योंकि–"क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम्[८] अर्थात्–"धार्मिक क्रियाएँ बिना पतिव्रता पत्नी के सफल नहीं होती है।" स्पष्ट है कि नारी प्रेम और स्नेह का सागर है और रस का आधार है परन्तु यह प्रेम नैतिक तथा आध्यात्मिक पक्ष पर बल देता है।"भारतीय शास्त्रों में नर–नारियों का संयत संबंध कठिन अनुशासन के रूप में आदिष्ट है। और वही कालिदास के काव्यों में सौन्दर्य के उपकरणों से सुसंगठित हुआ है।............... वह त्याग से परिपूर्ण, दुःख से चरितार्थ और धर्म से ध्रुवनिश्चित है। इसी सौन्दर्य से नर–नारियों के दुर्निवार और दुर्गम प्रेम के प्रलयकारी वेग ने अपने को संयत करके मंगलरूपी महासमुद्र में परम स्थिरता प्राप्त की है। इसी से वह संयत प्रेम बंधनविहीन, दुर्द्धष प्रेम की अपेक्षा महान् और आश्चर्यजनक है।"[९]

एक नारी जब माता का प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर लेती है तो ममत्व की देवी हो जाती है। वह निश्छल स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति होती है। पुत्र कार्तिकेय को देखने के लिये माता पार्वती सहस्त्रों नेत्रों की कामना करती है क्योंकि–"नंदनालोकनमंगलेषु क्षणं क्षणं तृप्यति कस्य चेतः?[१०] अर्थात्–"पुत्र को हर समय देखने के शुभकार्य से किसका चित्त तृप्त होता है?"

लज्जा और शालीनता की मूर्तिः– कवि की दृष्टि में लज्जा और शालीनता नारी का प्रकृति प्रदत्त गुण है। मालविका की शालीनता पर राजा विदूषक से कहता है–"कुतूहलवान् अपि निसर्गशालीनः स्त्रीजनः"[११] अर्थात्– "कौतुहल से परिपूर्ण होने पर भी स्त्रियाँ स्वभाव से शालीन होती हैं।" रघुवंश में कवि कहता है–"प्रविरला इव मुग्धवधूकथा"[१२] अर्थात् "मुग्धाएँ लज्जा के कारण बहुत कम बोलती हैं।" एक अन्य स्थान पर कवि कहता है–"कात्स्र्न्येन निर्वर्णयितुं च रूपमिच्छन्ति तत्पूर्वसमागमानाम्। न च प्रियेष्वायतलोचनानां समग्रवृत्तीनि विलोचनानि।।"[१३] "पहले पहल मिलने वाले प्रिय के सम्पूर्ण रूप को देखना चाहकर भी विशाल नेत्रों वालियों के नेत्र प्रिय को देखने के लिए अधखुले ही रहते हैं।"

सुकुमार एवं भावुकः– स्त्रियाँअत्यन्त सुकुमार एवं भावुक होती हैं। उनका हृदय किसी प्रकार का आघात सहने में असमर्थ होता है। प्रियंवदा दुर्वासा ऋषि के श्राप की बात शकुंतला को बताना नहीं चाहती है क्योंकि–"को नामोष्णोदकेन नव मालिकां सिंचति?"[१४] अर्थात् "नवमालिका की लहलहाती बेल को भला कौन खौलते हुए पानी से सींचेगा?" मैना अपनी पुष्प सी कोमल पुत्री पार्वती को कठोर तप करते देख सहसा कह उठती है–"पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः"[१५] अर्थात्– "शिरीष के पुष्प पर भौरें भले ही आकर बैठ जाएं पर यदि कोई पक्षी उस पर बैठने लगे तो नन्हा सा पौधा झड़ ही जायेगा।"

सुकुमार विरही स्त्रियों को प्रियमिलन की आशा ही आश्रय देती है–"आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यंगानाम सद्यःपातिप्रणयिहृदयं विप्रयोगे रूणद्धि"[१६] अर्थात्–"स्त्रियों के कुसुम से कोमल एवं शीघ्र टूटने वाले प्रेमी हृदय को आशा का बंधन ही वियोग में बाँधे रखता है।"

सुकुमार और भावुक अंगनाओं का कुसुमकोमल प्रणयकातर हृदय आशा के बंधन से ही टूटकर बिखर जाने से रुका रहता है।

इसके विपरीत कवि की एक सूक्ति यह भी है–"कठिनाः खलु स्त्रियः"[१७] अर्थात् "स्त्रियाँ तो कठोर होती है।" महादेव द्वारा कामदेव को भस्म करने के पश्चात् रोती कलपती रति अपने जीवन को कोसते हुए यह बात कहती हैं। संभवतः प्रसंग के तहत इस सूक्ति में कवि को ऐसी सुकुमार नारी की अपेक्षा है जो प्रिय के वियोग में जीवित रहने में भी असमर्थ हो जाए। यही भाव रति द्वारा कवि ने प्रकट करना चाहा है।

अनुराग योग्य पुरुष की आकांक्षीः– प्रत्येक नारी अपने जीवन में एक सच्चे और अनुरागयोग्य पुरुष की कामना करती है। ऐसा पुरुष जो सर्वगुण सम्पन्न हो और अनायास ही जिससे प्रेमानुराग हो जाए। अपनी इच्छा के अनुरूप पुरुष को पाकर वह किसी अन्य पुरुष की ओर दृष्टि करना भी नहीं चाहती। इन्दुमती के स्वयंवर के समय जब वह अज के पास आकर रुक जाती है तो कालिदास सहसा कह उठते हैं–"न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली"[१८] अर्थात्– "विकसित आमवृक्ष को पाकर भ्रमरावली किसी अन्य वृक्ष की इच्छा नहीं करती"। इन्दुमती ने जब सर्वांग सुंदर राजा अज को देख लिया तब वह वहीं रुकी रह गई और फिर किसी के समक्ष न जा सकी। इससे प्रकट होता है कि श्रेष्ठ नारी के लिए श्रेष्ठ पुरुष ही अनुराग योग्य होते हैं। अज और इन्दुमती के मिलन को कवि इस प्रकार उचित ठहराता है–"रत्नं समागच्छतु कांचनेन"[१९] अर्थात्– "नग को सोने में ही जड़ा जाए।" इस प्रकार स्त्री

और पुरुष का यथायोग्य संबंध प्रशंसनीय होता है।

चतुर एवं चालाकः– कवि स्त्रियों के व्यवहार में पाई जानेवाली चतुरता तथा चालाकी को प्रकृति प्रदत्त गुण मानते हैं। दुष्यन्त जब विस्मृतिग्रस्त होकर शकुन्तला को झूठा समझता है तो वह उसके द्वारा बताई गई हर बात को चालाकी और चतुरतापूर्ण किया गया छल समझकर कहता है-"प्रत्युत्पन्नमतिस्त्रैणम्"[२०]अर्थात् "इसी को कहते हैं स्त्रियों की तुरत बुद्धि।" एक अन्य स्थान पर रानी द्वारा भेजे गये झूले के निमन्त्रण को पाकर राजा समझता है कि रानी ने उसके भटके हुए हृदय का भेद जान लिया है और कहता है-"निसर्गनिपुणाः स्त्रियः"[२१]अर्थात् "स्त्रियाँ स्वभाव से ही निपुण होती है।" परिस्थिति और समय के अनुसार व्यवहार करने की इसी निसर्ग-निपुणता के कारण उसमें चालाकी और चतुराई की संभावना की जाती है। शकुंतला द्वारा राजा को अपनी स्मृति दिलाने हेतु किये गये प्रयासों को दुष्यन्त कपटतापूर्ण आचरण समझता है और कहता है-"स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वं मानुषीषु संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः। प्रागन्तरिक्षगमनात्स्वमपत्यजातमन्यैर्द्विजैः परभृताः खलु पोषयन्ति।"[२२]अर्थात् "बिना सिखाये प्राप्त होने वाली स्त्रियों की पटुता मनुष्येत्तर प्राणियों में भी दिखाई देती है फिर इन बुद्धि वाली स्त्रियों का तो पूछना ही क्या? जब तक कोयलियों के बच्चे उड़ना नहीं सीख जाते तब तक वह दूसरे पक्षियों से ही उनका पालन करवाती हैं।"

विपरीत लिंग के प्रति एकाकी दृष्टिकोणः- स्त्री और पुरुष सृष्टि के कारण हैं। मानव जीवन की गतिशीलता इनके परस्पर सहयोग से ही संभव है, किन्तु कुछ प्राकृतिक तथा मानवनिर्मित सीमाओं के कारण कभी कभी विपरीत लिंग के प्रति प्रेम और विश्वास के स्थान पर घृणा और अविश्वास पनप जाता है जो परिवार, तथा समाज के लिये घातक सिद्ध होता है। परस्पर अविश्वास नर-नारी के मधुर संबधों में सबसे बाधक तत्व है। जब नारी को किसी पुरुष से विश्वासघात मिलता है तो वह समस्त पुरुष जाति को विश्वासघाती मान बैठती है। इरावती जब राजा को मालविका के प्रेमपाश में बंधा देखती है तो सहसा कहती है-"अविश्वसनीयाः पुरुषाः२३अर्थात्"पुरुष अविश्वसनीय होते हैं।"?

ध्यातत्व है कि नारी की इस प्रकार की धारणा किन्हीं विशेष परिस्थिति की प्रतिक्रिया मात्र है, सर्वथा और सदैव का सत्य नहीं है।

इसके विपरीत पुरुष भी जब स्त्री पर अपना सम्पूर्ण नियन्त्रण और अधिकार स्थापित नहीं कर पाता तो वह स्त्री को दोषी ठहरा देता है। कंचुकी रात-दिन महल की स्त्रियों की सेवा से थककर कह उठता है-"स्त्रीषु कष्टोऽधिकारः"[२४] "स्त्रियों पर अधिकार पाना कष्टकर है।"

फिर भी कालिदास ने नारी स्वभाव को परिस्थितियों और समय के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया है। डॉ. वेदव्रत इस संबंध में कहते हैं- "अपनी दुर्बलता को छुपाने हेतु स्त्री पर दोष मढ़ने वाले कुछ विचारकों के लिये वे (कालिदास) चेतावनी का काम करते हैं तथा बताते हैं कि नारी को अनुराग योग्य पुरुष की कामना रहती है। साथ ही वे नर-नारी के दोनों शुभ तथा अशुभ रूपों को प्रत्यक्ष करते हैं परन्तु उसके चालाक कठोर और उद्धत रूप की अपेक्षा लज्जाशील, शालीन और मनस्वी रूप को अधिक दृढ़ भावना से व्यक्त करते हैं।"[२५]

नारी की शारीरिक विशेषताओं संबंधी सूक्तियाँः– उपर्युक्त सूक्तियों में नारी से संबंधित भाव पक्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अग्रलिखित सूक्तियों में नारी के शारीरिक सौन्दर्य आकर्षण, भाव भंगिमाओं संबंधी कला पक्ष की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न होगा।

रूप और सौन्दर्यः– कालिदास की नायिकाएँ रूप और सौन्दर्य की स्वामिनी हैं। "वस्तुतः कालिदास रूप की माया से सर्वात्मना अभिभूत हैं और नारी सौन्दर्य का संस्पर्श मानो उनकी हृदय विपंची के सम्पूर्ण तारों को एक साथ झंकृत कर देता है।"[२६]एक स्त्री का रूप सौन्दर्य तभी सार्थक है जब वह प्रिय को आकृष्ट करे। जब महादेव द्वारा पार्वती के रूप सौन्दर्य का अनादर हुआ और वे कामदेव को भस्म करके अन्तर्ध्यान हो गये तो पार्वती दुःखी होकर कहती हैं-"प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता"[२७]अर्थात्- "सौन्दर्य तभी सफल है जब प्रिय को सुभग लगे।" एक स्थान पर पार्वती अपना श्रृंगार कर अपने अलंकृत रूप को दर्पण में देखकर शिव से मिलने को व्याकुल हो उठी क्योंकि-"स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः"[२८]अर्थात्"स्त्रियों का श्रृंगार तभी सफल होता है जब उनका प्रिय उन्हें देख ले।"

प्रेम और सौन्दर्य का अन्तर्संबंधः– प्रेम और सौन्दर्य का अत्यन्त प्रगाढ़ अन्तर्सबंध होता है। प्रिय के सानिध्य से सौन्दर्य उत्कृष्ट हो जाता है। महारानी धारिणी और अग्निमित्र के संबंध में परिव्राजिका कहती है -"अतिमात्रभासुरत्वं पुष्पति भानोः परिग्रहादनलः। अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि निशापरिगृहीतः"[२९]अर्थात्- "सूर्य के परिणय के प्रभाव से अग्नि चमक धारण करता है, निशा के परिणय से चन्द्रमा भी चमकीला हो जाता है।"

अंग–प्रत्यंग की नित्य चारुताः– कालिदास की दृष्टि में सौन्दर्य नित्य नवीन होता है क्योंकि नवीनता में आकर्षण होता है। डॉ. हरीश्चन्द्र कहते हैं- "कालिदास ने नारी सौन्दर्य के अन्तर्गत अनुपात तथा संतुलन का भी ध्यान रखा है। उनके प्रायः सभी नारी पात्रों का शारीरिक गठन संतुलित और सामंजस्यपूर्ण है।[३०] सौन्दर्य की चारुता सभी अवस्थाओं में बनी रहने वाली है। राजा मालविका के चलने, उठने और नृत्य करने में उसके सौन्दर्य को देखकर कहता है-"अहो। सर्वास्ववस्थासु चारुता शोभान्तरं पुष्यति"[३१]अर्थात्- "अहो। सौन्दर्य सभी अवस्थाओं में शोभा बढ़ाता है।"

सहज और प्राकृतिक सौन्दर्यः– कालिदास की नायिकाएं शकुंतला, पार्वती, यक्षिणी, सीता आदि सभी सहज और प्राकृतिक सौन्दर्य की स्वामिनी हैं। सहज और नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए बाध्य सौदर्य प्रसाधन अपेक्षित नहीं है। ऐसे सौन्दर्य के प्रस्फुटन के लिए तुच्छ से तुच्छ वस्तु भी उसका आभूषण बन जाती है। कालिदास तपस्विनी पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसका मुख संयत केशराशि में जितना सुंदर लगता था उतना ही जटाएँ रखने पर भी सुशोभित हो रहा था क्योंकि–"न षट्पदश्रेणिभिरेव पंकजं सशैवलासंगमपि प्रकाशते"[३२]अर्थात् "केवल भौरों से घिरा होने पर ही कमल सुंदर नहीं लगता, वरन् सिवार से लिपटा होने पर भी उतना ही सुंदर लगता है।" वल्कल धारिणी शकुंतला के विषय में दुष्यन्त कहता है–"सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति। किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।"[३३]अर्थात्– "सिवार से घिरा होने पर भी कमल सुंदर लगता है और चन्द्रमा पर पड़ा हुआ कलंक भी उसकी शोभा ही बढ़ाता है सत्य तो यह है कि सुंदर शरीर पर भला क्या नहीं शोभा देने लगता।"

आहार्य गुण से सौन्दर्य वृद्धिः– रमणीय को आहार्य गुण की अपेक्षा नहीं होती है किन्दु यह भी सत्य है कि स्वाभाविक सुंदर जन अलंकृत होकर और अधिक रमणीय हो जाते हैं। जल विहार करती हुई रानियाँ पहले ही अत्यन्त सुंदर हैं, कांतिमान राजा कुश का सानिध्य पाकर उनकी शोभा अत्यन्त बढ़ जाती है क्योंकि "प्रागेव मुक्ता नयनाभिरामाः प्राप्येन्द्रनीलं किमतोन्मयूरवम्"[३४]अर्थात्"मोती पहले से ही सुंदर होता है फिर यदि उसे इन्द्रनीलमणि के साथ गूंथ दिया जाए तब तो कहना ही क्या?"

सुकुमारताः– नारी में सुकुमारता सौन्दर्य की सहचरी है। कालिदास ने सौकुमार्य को विशेष महत्व दिया है। "शकुंतला और पार्वती सी सुकुमार नायिकाओं की सृष्टि करके और फिर उन्हें तपस्या में रत करके मानों कवि स्वयं मर्माहत हो गया है।"[३५] सुकुमार के साथ व्यवहार भी सुकुमारतापूर्वक करना पड़ता है। दुष्यन्त के प्रेम में बेसुध शकुंतला को दुर्वासा ऋषि शाप दे देते हैं किन्तु प्रियम्वदा शकुन्तला को यह सत्य बताना नहीं चाहती क्योंकि–"को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिंचति"[३६]अर्थात्"नवमालिका की लहलहाती बेल को भला कौन खौलते हुए पानी से सींचेगा?" गिरिराज की पत्नी मैना भी पार्वती को तपस्यारत देखकर बेचैन हो जाती है क्योंकि"पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणः"[३७]अर्थात् "शिरीष का पुष्प भौरे का भार तो सह सकता है किन्तु पक्षी का नहीं।"

शील और सौन्दर्यः– कालिदास ने आकृति की सुंदरता के साथ शील का घनिष्ठ संबंध माना है। पार्वती के सौन्दर्य निरूपण में कवि की यह मान्यता स्पष्ट शब्दों में व्यक्त हुई है। शिव पार्वती के शील सौन्दर्य के संबंध में कहते हैं–"यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये न रूपमित्य व्यभिचारिः तद्वचः तथापित ते शील मदारदर्शने तपस्विनामत्युपदेशतां गतम्"[३८]अर्थात्–"हे पार्वती। यह जो कहा जाता है कि रूप पापवृत्ति के लिए नहीं होता, यह वचन ठीक ही है। हे उदारदर्शने। तुम्हारा शील तो तपस्वियों को भी उपदेश देने वाला है।"

यद्यपि कालिदास ने रूप को पापवृत्ति से मुक्त माना है किन्तु यह उक्ति व्यवहारिक और यथार्थ दृष्टिकोण से पूर्णतः सत्य प्रतीत नहीं होती है। कुछ सुंदरियों की आकृति वास्तव में सुंदर होती है किन्तु उनका अन्तर्मन भी उतना ही सुंदर होगा, यह निश्चयतः कहा नहीं जा सकता। सौन्दर्य सभी मानवों को पापवृत्ति से दूर रखें, ऐसा भी कहना पूर्ण सत्य न होगा। सौन्दर्य सदैव शीलवान् बना रहे इसकी अपेक्षा सदैव नहीं की जा सकती है।

सौन्दर्य और कुलीनताः– कालिदास ने सौन्दर्य और कुलीनता का अभिन्नत्व स्वीकार किया है। दुष्यन्त शकुंतला के सौन्दर्य से प्रभावित होकर अनूसुया से उसके विषय में जानकारी लेते समय स्वयं सहसा कह उठता है–"मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति बसुधातलात्"[३९]अर्थात्– "भला मनुष्यों में ऐसा रूप कहां संभव है। चंचल चमक वाली बिजली पृथ्वी तल से थोड़े ही निकलती है।" इस सूक्ति के गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कालिदास के समय कुलीन को संदरतम् मानने की धारणा के पीछे तत्कालीन वर्ण व्यवस्था का प्रभाव अवश्य रहा होगा।

नारी की विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं संबंधी सूक्तियाँः– कालिदास की सूक्तियों में नारी की विभिन्न शारीरिक विशेषताओं तथा भावात्मक गुणों, अवगुणों के साथ–साथ समाज की विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करती हुई नारी का निदर्शन भी मिलता है। ये सूक्तियाँ तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति पर तो प्रकाश डालती ही हैं, सृष्टि की गतिशीलता हेतु उसकी शाश्वत् आवश्यकता का भी ज्ञान कराती हैं। यहाँ ध्यातत्व है कि इन सूक्तियों के प्रस्फुटन में कवि के व्यक्तिगत दृष्टिकोण के साथ–साथ तत्कालीन परिस्थितियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह सूक्तियाँ कालिदास के अपने युग की नारी का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती हैं तथा समकालीन समाज के लिये भी प्रासंगिक हैं।

परिवार के अंग के रूप में पुत्री का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उसकी शारीरिक विशिष्टता के कारण उसे पुत्र की अपेक्षा अधिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है। अपनी कन्या की रक्षा हेतु पिता प्रयत्नशील रहता है। कालिदास भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं। ब्रह्मचारी वेश में शिव, गिरिराज की पुत्री पार्वती की तपस्या के विषय में उहापोह करते हैं क्योंकि–"कः करं पन्नगरत्नं सूचये"[४०]अर्थात्"मणिधर की मणिशलाका को लेने के लिये कौन हाथ बढ़ायेगा।" अपनी कन्या के लिये उचित वर प्राप्त कर पिता निश्चित हो जाता है–"अशोच्या हि पितुः कन्या सद्र्भर्तृप्रतिपारिता[४१]अर्थात्"अच्छे वर को दी हुई कन्या पिता के लिए चिंतनीय नहीं रहती।" पुत्री के विषय में पिता से अधिक माता को ज्ञात होता है इसलिये "प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः"[४२]अर्थात्"कन्या के विषय में गृहस्थी लोग प्रायः पत्नी के नेत्रों से देखते हैं।"

भारतीय समाज में विवाह को अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्था माना गया है। कालिदास ने विवाह में युवक और युवती का

पूर्वानुराग अत्यन्त मंगलदायक माना है। गन्धर्व विवाह का वर्णन इसी तथ्य का द्योतक है किन्तु पूर्वानुराग जन्य युवक युवती के मिलन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। शकुंतला और दुष्यन्त के पूर्वानुराग का परिणाम घातक सिद्ध हुआ इसलिये कवि को कहना पड़ा–"इत्थमात्कृत प्रतिहतं चापलं दहन्ति अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्संगतं रहः अज्ञातहृदयेष्वेव वैरीभवति सौहृदम्"[४३]अर्थात्"बिना सोचे समझे जो कार्य किया जाता है उसमें ऐसा ही दुःख मिलता है। इसलिये एकान्त का मिलन परीक्षापूर्वक करना चाहिए अन्यथा अज्ञात हृदय वालों के मध्य इस प्रकार सौहार्द बैर में बदल जाता है।" कालिदास ने वर वधु की समानता को आदर्श विवाह हेतु वांछनीय माना है। वह कहते हैं–रत्नं समागच्छतु कांचनेन[४४]अर्थात्"नग को सोने में ही जड़ा जाए।" यहाँ राजा अज को इन्दुमती के सदृश बताती हुई सुनन्दा का आशय यही है कि स्त्री और पुरुष का यथायोग्य संबंध अत्यन्त प्रशंसनीय होता है। यह मणिकांचन संयोग के समान है। ऋषि कण्व भी शकुंतला के लिये दुष्यन्त जैसे योग्य वर मिलने की सूचना पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और प्रियम्वदा के शब्दों में उन्होंने कहा–"सुशिष्यपरिदत्ता विद्यैवाशोचनीया संवृत्ता"[४५]अर्थात्"जैसे योग्य शिष्य को विद्या देने से मन में दुःख नहीं रहता, वैसे ही तुझे भी योग्य पति के हाथ में देकर मुझे भी दुःख नहीं है।"

पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक होते हैं। नारद ने जब गिरिराज को यह भविष्य वाणी सुनाई कि उनकी कन्या अपने प्रेम से शिव के आधे शरीर की स्वामिनी तथा उनकी अकेली पत्नी बनकर रहेगी तो गिरिराज निश्चिंत हो गये और पार्वती के प्रगल्भावस्था में पदार्पण करने पर भी उन्होंने दूसरा वर खोजने की चिंता त्याग दी क्योंकि–"ऋते कृशानोन हि मन्त्रपूतमर्हन्ति तेजांस्यपराणि हव्यम्"[४६]अर्थात्"मन्त्र से पवित्र हुई हवि को ग्रहण करने में पावक के अतिरिक्त और कौन सा तेज समर्थ होता है।"

परिवार में पत्नी की इसी पूरक स्थिति के कारण ही संभवत विवाह के पश्चात् कन्या का मायके में रहना गरिमापूर्ण नहीं माना जाता है। शकुंतला को दुष्यन्त द्वारा विस्मृत कर देने पर शकुंतला हेतु शाङ्ग्रव राजा से कहता है–"सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमती विशङ्क्ते। अतः समीपे परिणेतुरिष्येत प्रियाप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः।"[४७]अर्थात्"जो सुहागन स्त्री अपने पिता के घर पर रहती है वह चाहे जितनी भी पतिव्रता हो फिर भी लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं। अतः चाहे स्त्री अपने पति को प्रिय हो अथवा अप्रिय, उसके बन्धुजन उसे पति के पास ही देखना चाहते हैं।"

इससे प्रतीत होता है कि कालिदास भी स्त्री की स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं हैं और पतिपरायण नारी की ही प्रशंसा करते हैं। पर्वतराज की पत्नी मैना ने जब पति की इच्छानुसार पार्वती को शिव के लिये देना स्वीकार कर लिया तो कवि बरबस कह उठता है–"भवन्त्यव्यभिचारिण्यो भर्तुरिष्टेपतिव्रताः"[४८]अर्थात्"पतिव्रता नारियां पति के अभिमत के विरुद्ध आचरण नहीं करती।"

पतिव्रता स्त्रियाँ समाज में प्रतिष्ठा का कारण बनती हैं। उनके अलौकिक तेज से किसी परपुरुष को उन्हें स्पर्श करने का साहस भी नहीं होता है। शकुंतला दुष्यन्त द्वारा तिरस्कृत किये जाने पर जब अप्सरा लोक चली जाती है तो राजा विदूषक से विचार विमर्श करता है–"कः पतिदेवतामन्यः परामर्ष्टुमुत्सहेत"[४९]अर्थात्"पति को देवता रूप में देखने वाली पतिव्रता स्त्री को भला कौन साधारण जन स्पर्श कर सकता है।"

भारत में प्राचीन काल से ही बहुपत्नीक प्रथा विद्यमान रही है।[५०]"कालिदास ने भी अपने तीनों नाटकों के नायक ऐसे चुने हैं जो बहुपत्नी वाले हैं पर नवोढ़ा पर विशेष प्रेम रखते हैं और प्रौढ़ा के प्रति उनका अनुराग कम हो चुका है। वे सभी नायक की विवाहिता पत्नियाँ हैं, इसलिये उनका कर्तव्य है कि वे पतिभक्ता बनी रहें और पति की प्रसन्नता हेतु सौत को सहे।"[५१] शकुंतला की विदाई के समय कण्व ऋषि शकुंतला को सीख देते हैं –"प्रिय सखी वृत्तिं सपत्नीजने"[५२]अर्थात्"अपनी सौतों से सखियों जैसा प्रेम रखना।" पति की प्रसन्नता के लिये ही आदर्श पत्नी की भूमिका निभाना उसका कर्तव्य होता है जैसे क्रोध न करना, दास–दासियों को प्रेमपूर्वक रखना, सौभाग्य पर घमण्ड न करना आदि तभी तो कण्व ऋषि आगे कहते हैं– "जो स्त्रियाँ घर में इस प्रकार चलती हैं वे ही सच्ची गृहणियाँ है और जो इसका उल्टा करती हैं वे खोटी स्त्रियाँ हैं और अपने कुल की नागिन होती है।"[५३] पत्नी से यह भी आशा की जाती है कि वह नववधु की प्राप्ति में पति का सहयोग करे। देवी धारिणी द्वारा राजा हेतु मालविका का हाथ स्वयं थमा देने पर परिव्राजिका उसकी प्रशंसा में कहती है–"प्रतिपक्षेणापि पतिं सेवन्ते भर्तृवत्सलाः साधव्यः। अन्यसरितामपि जलं समुद्रगाः प्रापयन्त्युदधिम्।।"[५४]अर्थात्–"पति से प्रेम करने वाली साध्वी पत्नियाँ सौत के द्वारा भी पति की सेवा करती हैं। नदियाँ अन्य सैकड़ों सरिताओं को भी समुद्र तक पहुँचा देती है।"

पत्नी परिवार की धुरी है अतः उसके साथ ही परिवार के धार्मिक क्रियाओं को संपन्न किया जाता है। अरुन्धती को गुरु वशिष्ठ के साथ देखकर शिव ने विचार किया कि–"क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम"[५५]अर्थात्–"धार्मिक क्रियाओं का मूलाधार सत्पत्नी ही है।" धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाकलापों में पत्नी की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाकर पत्नी के अधिकारों के प्रति चेतना जागरण पुरुष प्रधान समाज के विशिष्ट पक्ष की ओर संकेत करता है। डा० वेदव्रत कहते हैं– "पत्नी के बिना याज्ञिक क्रियाओं को अपूर्ण बताकर सत्पत्नी को कुछ अधिकार दिये गए एवं पारिवारिक महत्व की अनुभूति कराई गई है। इससे सत्पत्नी बनने की इच्छा हर पत्नी में स्वतः जागृत होती होगी।"[५६]

कालिदास के समय सतीप्रथा समाज में अस्तित्व में थी क्योंकि पत्नी द्वारा अनुसरण अर्थात् सती प्रथा को आदर्श मानने वाली धर्मपत्नी का चित्र कालिदास ने अपने रचनाओं में खींचा है। कामदेव का अनुगमन करने की इच्छा से विलाप करती हुई रति कहती है–"शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते। प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नंहि विचेतनैरपि"[५७]अर्थात्–"चाँदनी चाँद के साथ चली जाती है, इसलिये पति का अनुगमन करना तो जड़ों में भी पाया जाता है फिर मैं चेतन होकर अपने पति के पास क्यों न चली जाऊँ।" क्योंकि "अनपायिनि संश्रयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी"[५८]अर्थात् भला हाथी की टक्कर से वृक्ष के टूट जाने पर उसके सहारे चढ़ी हुई लता क्या कभी बची रह पाती है।"

संभवतः सामाजिक सुरक्षा एवं भरण पोषण की दृष्टि से पुरुष पर आश्रित होने के कारण समाज में यह भावना बलवती हुई

होगी कि पुरुष के अभाव में नारी का जीवन असंभव है। डॉ. वेदव्रत कालिदास की सूक्तियों में सती प्रथा की गंध तो पाते हैं किन्तु उन्हें उसका प्रबल समर्थक बताने में संकोच करते हैं- "कालिदास को संभवतः यह अभिप्रेत न था। इसीलिए इस सूक्तियों को कहने वाली रति को वे जीवित रखते हैं।"[५६]

पति पत्नी जब तक माता-पिता नहीं बन जाते तब तक परिवार अपूर्ण रहता है। परिवार में माता के रूप में नारी सदैव सम्मान की पात्र रही है। माता अपने बच्चों पर स्नेह और वात्सल्य की छाया करती है। अपने पुत्र कार्तिकेय को पाकर हर्षातिरेक में पार्वती का ध्यान गंगा और कृतिकाओं को प्रणाम करने की ओर नहीं गया क्योंकि "पुत्रोत्सवे माद्यति का न हर्षात"[६०]अर्थात् "भला कौन ऐसी माता होगी जो अपने पुत्र के प्रेम में सुध-बुध न खो बैठती हो।" इतना ही नहीं कार्तिकेय की ओर अपलक देखती माता पार्वती सहस्त्रों नेत्रों की कामना करती है-"नन्दनालोकनमंगलेषु क्षणं क्षणं तृप्यति कस्य चेतः?"[६१]अर्थात् "भला पुत्र को क्षण क्षण देखने से किसका जी भर पाता है।" जब कार्तिकेय को देवताओं के सेनापति बनाये जाने तथा शत्रु तारकासुर को मारने का कार्य सौंपा गया तो पार्वती गर्व से फूली न समाई क्योंकि -"सुतविक्रमे सति न नंदति का खलु वीरसूः"[६२]अर्थात् "ऐसी भला कौन सी माता होगी जो अपने पुत्र की वीरता की बात से प्रसन्न न हो।" केवल पुत्र की ही नहीं पुत्रियों के लाड़ प्यार तथा दुलार की परम्परा भी भारतीय संस्कृति में विद्यमान रही है। पुत्री को पराया धन मानकर उसका यथासंभव वात्सल्यपूर्वक पालन पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है क्योंकि उन्हें पुत्री वियोग का दुख सहना पड़ता है। यदि पुत्री को पति की ओर से संतुष्टि होती है तो माता-पिता चिंतामुक्त हो जाते हैं किन्तु वैवाहिक जीवन के कष्ट से माता-पिता भी दुखी तथा चिंतित रहते हैं। शकुंतला के विरह से पीड़ित दुष्यन्त को विदूषक समझाता है कि यदि मेनका शकुंतला को ले गई है तो शीघ्र ही तुमसे समागम होगा क्योंकि -"न खलु माता-पितरौ भर्तृवियोगदुःखितां दुहितंर चिरं द्रष्टुं पारयतः"[६३]अर्थात् "पति से बिछड़ी हुई अपनी कन्या के दुख को माता-पिता अधिक दिनों तक नहीं देख सकते।" पार्वती की माता मैना यह जानकर बड़ी प्रसन्न होती है कि पार्वती शिव की प्रिया है और उनकी कन्या शिव के साथ संयुक्त है क्योंकि-"भर्तृवल्लभतया हि मानसीं मातुरस्यति शुचं वधूजनः"[६४]अर्थात् "भर्ता की प्यारी होकर वधुएँ अपनी माता के मानसिक शोक को दूर करती हैं।"

उपर्युक्त सूक्तियों के विश्लेषण से सिद्ध हो जाता है कि नारी समाज तथा परिवार की धुरी है। वह परस्पर स्नेह, दाम्पत्य प्रेम, वात्सल्य भाव एवं ममत्व के द्वारा परिवार के संयोजन तन्तु का कार्य करती रही है। पुत्री, पत्नी, माता, प्रेमिका, सहयोगी सभी रूपों में समाज के निर्माण तथा विकास में सहयोगिनी बनी है। यद्यपि कुछ सूक्तियों में उसके चरित्रके कुछ नकारात्मक तत्वों पर भी प्रकाश पड़ता है किन्तु सामान्यतः वह जीवन की सफलता की चाभी के समान कार्य करती है। कालिदास की सूक्तियों में प्रेमतत्व को प्रधानता मिली है इसलिये विवाह संबंधी निर्णय में रुचि तथा प्रेमतत्व को ध्यान में रखते हुए गान्धर्व तथा स्वयंवर विवाह को मान्यता प्रदान की गई। पति पत्नी के संबंधों में गुण, शील तथा समानता पर बल दिया गया। वीर प्रसिविनी माता को आदर्श माना गया। ममत्व व वात्सल्य से परिपूर्ण माता सदैव ही आदर का पात्र रही है। इस प्रकार कालिदास की सूक्तियाँ 'नारी' को समग्र रूप में प्रस्तुत करने में पूर्णतयः सक्षम है जिसमें भावपक्ष, शारीरिक पक्ष तथा सामाजिक भूमिकाओं का निर्वहन महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

संदर्भ–

१.संस्कृत सूक्तियों लोकोक्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, डा० वेदव्रत, नई दिल्ली, १६६०, पृष्ठ २६
२.वही, पृष्ठ ३७
३.हर्षचरित, १-१६ पृष्ठ ५, श्री मज्जीवानंद विद्यासागर हर्षचरित टीका, पृष्ठ १२
४.मेघदूत, १/३०
५.मालविकाग्निमित्र, ३/१३
६.वही ३/१६ पंक्ति ४८४
७.विक्रमोर्वशीय, २/२१
८.कुमारसंभव, ६/१३
६.रवीन्द्रनाथ ठाकुर : प्राचीन साहित्य (अनु०) पं० रामदहिन मिश्र, तृतीय संस्करण, पृष्ठ ३६
१०.कुमारसंभव, ११/२०
११.मालविकाग्निमित्र, ४/७
१२.रघुवंश, ६/३४
१३.मालविकाग्निमित्र, ४/८
१४.अभिज्ञानशाकुंतल, ४/१ सं० २१
१५.कुमारसंभव, १/४
१६.मेघदूत, १/६
१७.कुमारसंभव, ४/५
१८.रघुवंश, ६/६६
१६.वही, ६/७६
२०.अभिज्ञानशाकुंतल, ५/२१ पंक्ति - ६५
२१.मालविकाग्निमित्र, ३/२ पंक्ति ८७
२२.अभिज्ञानशाकुंतल, ५/२२

२३.मालविकाग्निमित्र, ३/१६
२४.विक्रमोर्वशीय, ३/१
२५.डॉ वेदव्रत, वही, पृष्ठ १७८
२६.महाकवि कालिदास, डॉ रमाशंकर तिवारी, वाराणसी १६८०, पृष्ठ २७६
२७.कुमारसंभव, ५/१
२८.वही, ७/२२
२६.मालविकाग्निमित्र, १/१३
३०.संस्कृत कविता में रोमाण्टिक प्रवृत्ति, डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा मेरठ, पृष्ठ १६८-६६
३१.मालविकाग्निमित्र, २/६
३२.कुमारसंभव, ५/६
३३.अभिज्ञानशाकुंतल, १/१६
३४.रघुवंश, १६/६६
३५.डॉ. वेदव्रत, वही, पृष्ठ २६७
३६.अभिज्ञानशाकुंतल, ४/१ सं० २१
३७.कुमारसंभव, १/४
३८.वही, ५/३६
३६.अभिज्ञानशाकुंतल, १/२४
४०.कुमारसंभव, ५/४३
४१.वही, ६/७६
४२.वही, ६/८५
४३.अभिज्ञानशाकुंतल, ५/२४
४४.रघुवंश, ६/७६
४५.अभिज्ञानशाकुंतल, ४/३
४६.कुमारसंभव, १/५१
४७.अभिज्ञानशाकुंतल, ५/१७
४८.कुमारसंभव, ६/८६
४६.अभिज्ञानशाकुंतल, ६/६
५०.भारत वर्ष में विवाह एवं परिवार, के, एम. कपाड़िया, पृष्ठ ७००
५१.डॉ. वेदव्रत, वही, पृष्ठ १३६
५२.अभिज्ञानशाकुंतल, ४/१८
५३.वही, वही
५४.मालविकाग्निमित्र, ५/१६
५५.कुमारसंभव, ६/१३
५६.डॉ. वेदव्रत, वही, पृष्ठ १३७
५७.कुमारसंभव, ४/३३
५८.वही, ४/३१
५६.डॉ. वेदव्रत, वही, पृष्ठ १३४
६०.कुमारसंभव, ११/१७
६१.वही, ११/२०
६२.वही, १२/५६
६३.अभिज्ञानशाकुंतल, ६/६
६४.कुमारसंभव, ८/१२

आयशा फ़ातमी
वरिष्ठ प्रवक्ता-प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग , नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org